विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ,लक्खीसराय

रूपम कुमारी, वर्ग-दशम, विषय-हिन्दी 🌷🌷

दिनांक- ६/७/२०.

|| अध्ययन-सामग्री ||

सुप्रभात बच्चों , समय बेहद ही कीमती है। यह जो पल बीत गया वह आनेवाला नहीं है ; इसलिए , हरेक पल का सदुपयोग करते हुए एक भी दिन की सामग्री की अनदेखी न करें ।

पठन-पाठन : आज हम बालगोबिन भगत पाठ का समापन करने जा रहे हैं । कल से इस पाठ. की प्रश्नावली को लेकर उपस्थित होंगे ।

बालगोबिन भगत पाठ का शेषांश ***बेटे के***

—

क्रिया -कर्म में तूल नहीं किया ; पतोहू से ही आग दिलाई उसकी । किंतु ज्योंहि श्राद्ध की अवधि पूरी हुई , पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया , यह आदेश देते हुए कि उसकी दूसरी शादी कर देना ।इधर पतोहू रो-रोकर कहती -'मैं चली जाउँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा , बीमार पड़े तो कौन एक तपस्वी पानी देगा ? मैं पैर पड़ता हूँ ,मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए । लेकिन भगत का निर्णय अटल था । तू जा नहीं सकती तो मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगी - यह थी उनकी आखिरी दलील और इस दलील के आगे बेचारी की क्या चलती ?

बालगोबिन भगत की मौत उन्हें के अनुरूप हुई ।वह हर वर्ष गंगा-स्नान करने जाते ।स्नान पर उतनी आस्था नहीं रखते ,जितना संत-समागम एवं लोक- दर्शन पर! पागल ही जाते ।करीब तीस कोस पर गंगा थी । साधु को संबल लेने का क्या हक ?और गृहस्थ किसी से भिक्षा क्यों माँगे ? अत:घर से खाकर चलते तो घर पर ही लौटकर खाते । रास्ते भर खँजड़ी बजाते-गाते ।जहाँ प्रयास लगती ,पा नी की लेते ।चार-पाँच दिन आने-जाने में लगते ,किंतु इस लंबे उपवास में भी वही मस्ती। अब बुढ़ापा आ गया था , किंतु चेक वही जवानी वाली। इस बार लौटे तो तबियत कुछ सुस्त थी ।खाने-पीने के बाद भी तबियत नहीं सुधरी ,थोड़ा बुखार आने लगा । किंतु ,नेम -व्रत तो छोड़ने वाले नहीं थे । वही

दोनों जून गीत ,स्नान-ध्यान,खेती-बारी देखना । -दिन-दिन छीजने लगे। लोगों ने महीने धोने से मना कर दिया, आराम करने को कहा। किंतु ,हँसकर चाल देते रहे ,उसदिन संध्या गीत गाए ,किंतु मालूम होता -जैसे तागा टूट गया हो ,माला का एक-एकएक -एक जाना बिखरा हुआ है। भोर में लोगों ने गीत नहीं सुना ,जाकर देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे,सिर्फ उनका पंजर पड़ा है ।.

समाप्त 🌷🌷🌷 पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ें व समझें ।

फिर कल भेंट होगी ....